हिन्दी भाषा के विकास के लिए कम्प्यूटर एक प्रभावी एवं आवश्यक माध्यम

डॉ. सीमा सिंह
सहायक प्रोफसर, हिन्दी विभाग,
दयानंद महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा।

भूमंडलीकरण के इस समय में आज पूरी दुनिया एक बटन की सीमा में समा गई है। सम्प्रेषण के लिए आज शारीरिक दूरियां किसी भी प्रकार से अवरोधक नहीं हैं। ये कहने की आवश्यकता नहीं है कि एकीकरण की इस प्रक्रिया में कम्प्यूटर ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। लगभग प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से हिन्दी भाषा के विकास में कम्प्यूटर किस प्रकार से प्रभावशाली यन्त्र के रूप में कार्य कर सकता है, और इसकी आवश्यकता क्यों आज और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गई है। इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। कोविड–19 महामारी ने भाषाओं और शिक्षा के क्षेत्र में इस यन्त्र की अनिवार्यता को और भी अधिक बढ़ा दिया है।

भाषा का अर्थ और महत्व–आरम्भ में भाषा के अर्थ, स्वरूप, विभिन्न परिभाषाएं और महत्व की बात की जाए तो, हम सहज ही कह सकते हैं कि जिस तरह से भूगोल, धर्म और जाति हम अर्जित नहीं करते बल्कि अनायास ही यह सब हमें जन्म से प्राप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार से एक या दो भाषाओं का समाज हम जन्म से ही पा लेते हैं। एक भाषाई परिवेश हमारे परिवार, आस–पड़ोस, गाँव या भाहर का होता है और हमारा रचाव–बसाव उसी भाषाई परिवेश में पोशित हो कर आकार पाता है।[1]

परिभाषा और अर्थ को लेकर भाषा के बारे में हम एक ही तत्व पर अधिक जोर रखते हैं और वह होता है– सम्प्रेषण। व्याकरण, शब्द कोषों, भाषा–विज्ञानों में भाषा की परिभाषा देते हुए इसी तत्व पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम दूसरों के विचार समझ सकते हैं व अपने विचार दूसरों को समझा सकते हैं, या भाषा एक–दूसरे के विचारों को समझने का माध्यम है।'

भाषा की ऐसी व्याख्या करते हुए इसके दूसरे महत्वपूर्ण तत्वों को भूल जाते हैं। डॉ0 सपना चमड़िया कहती हैं कि 'हम एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व संस्कृति–निर्माण को भूल जाते हैं, जो भाषा का दूसरा अहम तत्व है।'[2] इसी प्रकार प्रमुख भाषाविद् न्गूगी वा थ्योंगों के अनुसार 'प्रत्येक भाषा के दो पहलु होते हैं – एक पहलू का संबंध भाषा की उस भूमिका को बताता है, जो हमें अपने अस्तित्व के लिए किए जाने वाले संघर्ष के दौरान एक–दूसरे के साथ सम्प्रेषण के योग्य बनाती है। दूसरी भूमिका उस इतिहास और संस्कृति की वाहक की है जो एक लम्बे अरसे तक सम्प्रेषण की प्रक्रिया के दौरान निर्मित होती है।'[3] ये विचार हमें बताते हैं कि भाषा सम्प्रेषण का एक बहुत प्रभावशाली और महत्वपूर्ण माध्यम तो है ही परन्तु बस इतना भर न हो कर हमारी संस्कृति और इतिहास का वाहक भी है। यह हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है और आत्मगौरव के भावों से भर देती है। यह एक मनुष्य को उसके सहज विकास में योगदान करती है। इस कार्य को दूसरे देश की भाषा कभी नहीं कर सकती, चाहे वह कितनी ही विकसित हो।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन का भी सहज विकास किया और इसका श्रेय देते हुए आजादी के संघर्ष में यह स्वीकार किया गया कि 'अब स्वदेशी वस्तु, स्वराज्य, स्वभाषा और राष्ट्रीय शिक्षा को स्वाधीनता–प्राप्ति का आवश्यक अंग माना जाने लगा। प्रायः सभी नेताओं ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करने

का विचार व्यक्त किया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का विचार था कि हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है।[4]

इसी की कड़ी में 15 अगस्त, 1947 ई0 को महात्मा गांधी ने बी0बी0सी0 को इंटरव्यू देते हुए कहा था– ' दुनियावालों से कह दो गांधी अँग्रेजी नहीं जानता।'[5] गांधी जी इस बात को बहुत गहराई से जानते थे कि किसी भी देश का व्यक्तित्व उसकी अपनी भाषा से ही बन सकता है, वह किसी दूसरे देश की अति विकसित और प्रसिद्ध भाषा से भी नहीं बन सकता।

हिंदी भाषा के विकास के लिए प्रयास –स्वतंत्रता से पहले और बाद में आधुनिक हिन्दी के विकास के लिए

ISBN: 978-81-954645-0-0

बड़े स्तर पर व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयास किए गए। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल), प्रताप नारायण मिश्र (हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्तान), पं0 बालकृष्ण भट्ट (हिन्दी प्रदीप), भाषा सवंर्द्धिनी सभा, हिन्दी उद्धारिणी प्रतिनिधि मध्य सभा, नागरी प्रचारिणी सभा (1893 ई0), महावीर प्रसाद द्विवेदी (सरस्वती), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (10 अक्टूबर, 1910 ई0), हिन्दी पैसा फंड समिति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर (1918 ई0), राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, अखिल भारतीय साहित्य परिशद् (1936 ई0) इत्यादि। इन प्रयासों को देखकर कहा जा सकता है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास के लिए बहुत से व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयास किए गए। उस समय की पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों के मध्य अपनी भाषा हिन्दी के लिए विकास को लेकर जागरुकता का माहौल बनाया गया और लोग इस मुद्दे पर मुखर हुए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारत सरकार द्वारा बहुत से प्रयास हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए किए गए। अनेक संस्थाएं और आयोगों का गठन जैसे– प्रथम राजभाषा आयोग (7 जून, 1955 ई0), संसदीय समिति का गठन (1757 ई0), केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (1960 ई0), वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (1961 ई0), राजभाषा अधिनियम, 1963 ई0, केन्द्रीय हिन्दी समिति (1967 ई0), केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो (1971 ई0), राजभाषा विभाग (26 जून, 1971 ई0), राजभाषा नियम, 1976 ई0, संसदीय राजभाषा समिति (सात खंड,1976 ई0), इत्यादि ने हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया। पर फिर भी हिंदी भाषा को वह जगह प्राप्त नहीं हो पाई जैसा सपना देखा गया था। हिंदी की स्थिति के बारे में कहा गया कि 'हिन्दी की जो स्थिति है, वह किसी से छिपी नहीं है..... । हिन्दी के प्रयोग के प्रायः सभी आदेश कागजों तक सीमित रह गए हैं। सरकारी कार्यालयों में मात्र दिखावे के लिए थोड़ा– बहुत काम हिन्दी में कर दिया जाता है। हिन्दी में लिखना तो दूर, हिन्दी में बोलने वाले को छोटा और घटिया दर्जे का व्यक्ति माना जाता है।[6] भाषा को लेकर स्थिति इतनी भी नकारात्मक नहीं है, ऐसे विचारों और मानसिकता में बदलाव के लिए यह आवश्यक है कि सूचना और प्रौद्योगिकी के साथ भाषा का सांमजस्य और अनुकूलन हो और वह आधुनिक युग की जरुरतों के अनुसार अपने आप को समृद्ध करे। आज भाषाई क्रांति और मशीनीकरण के गठबंधन ने सूचनाओं के अपार भंडार को उपायदेयता से जोड़कर उनका व्यावसायीकरण कर दिया है।यदि दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर हमें चलना है तो राजभाषा हिंदी को सक्षम, समर्थ एवं दक्ष बनाते हुए सूचना तथा संचार–प्रौद्योगिकी से पूरी तरह जोड़ना होगा।[7]

भाषा विकास में कम्प्यूटर एक प्रभावशाली माध्यम–कम्प्यूटर ने भाषाओं के भूमंडलीकरण को संभव कर दिया है। किसी भी भाषा के लिए कम्प्यूटर के अनुकूल होना उस भाषा के विकास की अहम् कड़ी है जिसे समझना प्रत्येक देश और भाषा के लिए आवश्यक हो गया है, क्योंकि किसी भी भाषा को भविष्य की विश्व–भाषा की मान्यता प्राप्त करने के लिए यह भी एक आवश्यक भार्त समझी जाती है कि वह कम्प्यूटर की भी भाषा हो।[8] कम्प्यूटर ने आज न केवल वैश्विक पहचान बनाई है बल्कि इसकी पहुंच भी सार्वभौमिक हो चुकी है। यह सिखने में जितना आसान है उतना ही कम खर्चिला भी है। इस पर कार्य करने के लिए समय कोई अवरोध नहीं है। सभी भाषाओं के लिए इस पर असंख्य अवसर उपलब्ध होने से दुनिया के सभी देश अपनी–अपनी भाषाओं को इस यंत्र के अनुकूल बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

वर्तमान में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् यानी एआइसीटीई ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी सहित आठ भारतीय भाषाओं में कराने की पहल की और सरकार द्वारा इसे मंजूरी प्रदान कर दी गई। + + + + + अभी इंजीनियरिंग की पढ़ाई आठ क्षेत्रीय भाषाओं में करने के प्रयत्न प्रारंभ हुए हैं, जिसे आगे आठवीं अनुसूची की अन्य ग्यारह भारतीय भाषाओं में विस्तृत करने की योजना है।[9] ऐसे प्रयासों से अंग्रेजी भाषा पर हमारी निर्भरता कम होगी और अपनी भाषा में काम करना हमें आत्मगौरव से भर देगा। ये इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाएं तभी गंभीर चिंतन, पढ़ाई, विश्लेशण, उच्च शिक्षा और योजना की भाषा बन सकती हैं, जब अंग्रेजी को उसकी ठीक जगह पर रखा जाए। कहने का मतलब यह है कि अंग्रजी को विश्व के अन्य देशों से संचार की भाषा के तौर पर या फिर विश्व भर की नवीनतम तकनीक और जानकारी हासिल करने की भाषा के तौर पर इस्तेमाल किया जाए। चीनी, जापानी, थाई, कोरियन और जर्मन, सब अंग्रेजी का इस्तेमाल इसी तरह करते हैं न कि हमारी तरह अंग्रेजी का दास बनकर।[10]

भाषा ने हमें जिस मानसिक गुलामी से जकड़ा हुआ है उसके परिणाम हम देखते हैं कि जब से भारत के स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम का प्रचलन बढ़ा है, उसके बाद की स्थिति का लेखा–जोखा किया जाए तो एक भयावह दृश्य के दर्शन होते हैं। अंग्रेजी माध्यम के प्रचलन से भाषाई अपंगों की एक पीढ़ी खड़ी हो रही है जो किसी भाषा में पारंगत नहीं हैं।[11] उसे ना ठीक से अंग्रेजी आई और अपनी भाषा ही ढंग से सीख पाए। हालांकि आजकल भी कुछ सर्वमान्य विज्ञानवेता ये

ISBN: 978-81-954645-0-0

कहने लगे हैं कि विज्ञान की भाषा अंग्रेजी ही हो सकती है। दरअसल ये लोग विज्ञान की भाषा नहीं बोल रहे हैं। ये लोग राजनीति की भाषा बोल रहे हैं। सच तो ये है कि विज्ञान की भाषा वही हो सकती है जो वैज्ञानिक की अपनी भाषा है।[12]

कम्प्यूटर पर हिंदी भाषा का विकास – भारत में इसकी भुरुआत 1965 के आसपास हिंदी भाषा और उसकी लिपि देवनागरी को लेकर कम्प्यूटर पर काम किया जाना आरम्भ हुआ। उसमें ठीक से सफलता लगभग 70 के दशक में भुरु हुई और हिंदी भाषा के विकास में एक नया अध्याय जुड़ गया। भारत में आई आई टी कानपुर, हैदराबाद की ईसीआईएल कंपनी ने हिंदी को कम्प्यूटर पर लाने के आरम्भिक और प्रभावशाली प्रयास किए थे। भारत में पहला व्यक्तिगत हिंदी कंप्यूटर 15 दिसंबर 1997 को प्रस्तुत किया गया। एम. ए. आई. और एन. आई. एस. सी. ओ. एम. ने आरम्भ में 'भारत भाषा' परियोजना का आरम्भ गैर अंग्रेजी भाशी लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्धेश्य से किया और कम्प्यूटर को भारतीय भाषाओं के अनुकूल बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसी कड़ी में 'लीप ऑफिस', 'मैट', भाब्द रत्न, सुलिपि,हिंदी पी. सी. डॉस', लीला प्रबोध, यूनिकोड, गुगल वाईस टाइपिंग आदि ने कंप्यूटर पर हिंदी के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आजकल सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े प्रत्येक क्षेत्र में सभी भारतीय भाषाओं में कार्य हो रहा है। 'इस्की' अर्थात् 'इंडियन स्टैंडर्ड कोड' – इसके अंर्तगत भारतीय और दक्षिण पूर्व एशिया की लिपियों को समाहित किया गया है। 'जिस्ट' प्रौद्योगिकी – यह एक एक्रोनिम है जो ' ग्राफिक्स एंड इंटेलिजेंस बेस्ड स्क्रिप्ट टेक्नोलॉजी' के प्रथम अक्षरों से बना है।

अनेकों हिंदी साइट्स आज उपलब्ध हैं जैसे– वेब दुनिया डॉट कॉम, रेडिफ डॉट कॉम, इंडिया डॉट कॉम, नेटजाल, आदि।

प्रमुख लक्ष्य या चुनौतियां – हम कुछ लक्ष्यों को प्रपप्त करके, हिंदी को कम्प्यूटर की प्रभावी भाषा के रूप में देख सकते हैं और भविष्य की चुनौतियों का सामना प्रभावी ढंग से कर सकते हैंः–

1. ज्यादा से ज्यादा संख्या में ई–पुस्तकों को उपलब्ध करवाकर।
2. भारतीय भाषाओं में अधिक से अधिक वेब साइट्स की उपलब्धता।
3. आवश्यकता के अनुरूप स्वचालित अनुवाद करने वाले सॉफ्टवेयर की उपलब्धता।
4. हिन्दी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं में आसान फॉन्ट की उपलब्धता।

1 भूमिका, भाषा का सच, सं0 सपना चमड़िया / अवनीश , मीडिया स्टडीज ग्रुप, 2014

5. भारतीय भाषाओं के स्टीक उच्चारण को पहचानने वाले कंप्यूटर का निर्माण।
6. मानक हिन्दी के अनुसार हिंदी में व्याकरण जांच, स्पैल चैकर, विलोम तथा पर्यायवाची भाब्द इत्यादि की जानकारी देने वाले अच्छे सॉफ्टवेयर की उपलब्धता।
7. हिन्दी भाषा के प्रामाणिक शब्दकोषों की उपलब्धता।
8. अपनी भाषा और लिपि में सोफ्टवेयर तैयार करना।
9. राजभाषा नियम के अनुसार सभी विभागों की वेबसाइट हिंदी में उपलब्ध करवाना।
10. सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदी के सरल, सहज स्वरुप और शैली का विकास करना।

किसी भी भाषा की सहजता, सरलता और उसका लोकोन्मुखी होना उसे लोकप्रिय बनाता है तभी 8 दिसम्बर, 2015 को राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के सचिव महोदय द्वारा जारी आदेश में बहुत स्पष्ट कहा गया है कि सुगम, सरल और सहज हिंदी का प्रयोग किया जाए। उन्होंने कार्यालयों के उच्चतम स्तर तथा हिंदी के विकास हेतु सरकार द्वारा बनाई गई संस्थाओं से अनुरोध किया है कि आवश्यकतानुसार शब्दावली, अनुवाद और प्रशिक्षण आदि में हिंदी के सरल, सहज और सुगम भाब्दों और रूपों को प्राथमिकता दें और बोलचाल की भाषा में मूल रूप में टिप्पणी एवं मसौदा लेखन को प्रोत्साहित करें।[13]

संम्भावनाएं– इंटरनेट प्रणाली के विस्तृत और महाशक्तिशाली तंत्र में भाषाओं के लिए अपार संम्भावनाओं का

ISBN: 978-81-954645-0-0

विशिष्ट स्थान होता है। इसी के परिणामस्वरुप अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी, चीनी, रूसी, फ्रांसीसी, जापानी, अरबी, स्पेनिश, इटेलियन आदि भाषाएँ कम्प्युटर के सहयोग से बहुत विस्तार कर पाई और विश्व में इनका प्रयोग भी बढ़ा। भारतीय भाषाओं और विशेषकर हिंदी को लेकर हमारे देश में भी गम्भीर प्रयास हो रहे हैं। भाषाओं के सन्दर्भ में यह समझा गया है कि 'कम्प्यूटर' और 'इंटरनेट' ने विश्व में सूचना क्रांति ला दी है और आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रह कर लोगों से जुड़ी नहीं रह सकती।[14] आज विश्व भर में एक अरब से ज्यादा लोग हिंदी से जुड़े हुए हैं। जो हिंदी के भविष्य को संम्भावनाओं से भर देता है। इस दिशा में भारत सरकार से लेकर अनेकों व्यावसायिक केन्द्र, अंतर्राष्ट्रीय बाजार और व्यक्तिगत प्रयासों से सकारात्मक दिशा मिली है।

नई शिक्षा नीति 2021 में हिंदी भाषा के साथ–साथ सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षा उपलब्ध करवाने की बात की गई है। अपनी भाषाओं में अध्ययन, अध्यापन ने भाषाओं के लिए और उन्नति के रास्ते खोल दिए हैं। महामारी के इस दौर ने स्पष्ट कर दिया है कि ऑनलाईन शिक्षा प्रबंधन कितना आवश्यक और प्रासंगिक है। शिक्षा के लिए विदेशी एप, सॉफ्टवेयर और साइट्स के सहारे मात्र काम तो चलाया जा सकता है परन्तु शिक्षा प्रभावी तभी हो पाएगी जब हम सारा तंत्र अपनी भाषा में विकसित कर पाएं। स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक विज्ञान, वाणिज्य, गणित, अर्थशास्त्र आदि विशयों को कम्प्यूटर पर अपनी भाषा में पढ़ा पाना ही भाषा को सशक्त बना सकता है। सकारात्मक बात यह है कि इस दिशा में सरकार से लेकर व्यक्तिगत स्तर तक असंख्य संसाधन इसे संभव बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। आवश्यकता बस भाषाओं की असुविधा को हटाना है। आर्थिक उदारीकरण के इस समय में भारत एक बड़ा और संम्भावनाओं वाला देश है, जिसके बाजार विदेशी कंपनियों के लिए खुले किए जा रहे हैं। ये सारी विदेशी कंपनियाँ भारतीय उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए भारतीय भाषाओं में खुब काम भी कर रही हैं ताकि उपभोक्ताओं को उन्हीं की भाषा में आर्कशित किया जा सके। निःसंदेह कम्प्यूटर के अनुकूल हिंदी भाषा का निर्माण थोड़ा चुनौतिपूर्ण हो सकता है पर यह अपार संभावनाओं से भरा हुआ क्षेत्र है।

सन्दर्भ सूचीः–

2 वही

3 न्गुगीश्मवा थ्योंगो, भाषा का साम्राज्यवाद, भाषा का सच, सं0 सपना चमड़िया / अवनीश , मीडिया स्टडीज ग्रुप, 2014 पृष्ठ–11

4 गोपाल राय, हिन्दी भाषा का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ–196

5 वही पृष्ठ–216

6 वही पृष्ठ–232

7 डॉ. पूरन चंद टंडन, भाषा प्रौद्योगिकी का युग और हिंदी का वर्चस्व, राजाभाषा भारती, वर्शः39, अंक 152, जुलाई–सितम्बर 2017, पृष्ठ–17

8 डॉ. अरविंदाक्षऩ. एम, राजभाषा हिन्दी के विकास में यूनिकोड की भूमिका,राजभाषा भारती, वर्शः39, अंक 152, जुलाई–सितम्बर 2017, पृष्ठ–26

9 अनुराग सिंह, मातृभाषा में तकनीकी शिक्षा की पहल, जनसत्ता, 21 जून 2021

10 मधु किश्वर, अंग्रेजी की दिमागी मार, सं0 सपना चमड़िया / अवनीश ,भाषा का सच, मीडिया स्टडीज ग्रुप, 2014, पृष्ठ–65

11 डॉ0 जोगा सिंह, भाषा नीति के बारे में अंतर्राष्ट्रीय खोज,सं0 सपना चमड़िया / अवनीश ,भाषा का सच, मीडिया स्टडीज ग्रुप, 2014, पृष्ठ–119

12 कृष्ण मेनन, विज्ञान की भाषा बनाम राजनीति की भाषा, सं0 सपना चमड़िया / अवनीश ,भाषा का सच, मीडिया स्टडीज ग्रुप, 2014, पृष्ठ–154

13 डॉ. विवेक कुमार सिंह, बदलता भाषाई परिदृशयः परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य की चुनौती, राजभाषा भारती, वर्षः 39, अंक 152, जुलाई–सितम्बर 2017, पृष्ठ– 78

14 राजनाथ सिंह, गृह मंत्री, भारत सरकार, हिंदी दिवस 2017 पर संदेश, राजभाषा भारती, वर्षः 39, अंक 152, जुलाई–सितम्बर 2017 ।।

ISBN: 978-81-954645-0-0